Volume : 1 | Issue : 5 | May 2012 ISSN - 2250-1991

Research Paper Sociology

वर्तमान में दलित वर्ग की समस्याएँ
Vartman me Dalit Varg ki Samasya

* Dr. H. L. Chavda

* एसोसियेट प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, डिपार्टमेन्ट ऑफ सोश्योलाजी, भावनगर विश्व-विद्यालय, भावनगर

भारतीय समाज में सदियों से दलित एवम पीड़ित लोगों को दलित कहा जाता है | इस वर्ग को अस्पृश्य नाम भी दिया गया है | यह वर्ग धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक रूप से नागरिक अधिकारों से वंचित रहा है | इस वर्ग के लिए ब्रिटिश सरकार ने ' Depressed Class ' शब्द का प्रयोग किया था, जिसका महात्मा गांधीजी और नरसिंह महेता ने 'हरिजन' कहकर पुकारा | यह वर्ग प्राचीन समय में 'पंचम वर्ण' के नाम से जाना जाता था | स्वातंत्र्योतर युग में भारतीय संविधान में 'अनुसूचित जाति' नाम से अभिहित किया गया यह वर्ग 'दलित वर्ग' के रूप में अपनी पहचान बनाते हुए गौरव का अहेसास करता है | जिन्होंने अपना दलित साहित्य भी विकसित किया है |

२००१ की जनगणना के अनुसार भारत में से गुजरात के दलित वर्ग की जन संख्या ३५.९२ लाख थी | जबकि सम्पूर्ण भारत में १६६५.७६ लाख थी | गुजरात में भी कच्छ जिल्ले में ११.७४% दलित निवासित है, जबकी सबसे कम प्रमाण डांग जिल्ले में ०.४६% दिखाई पड रहा है | संपूर्ण गुजरात कुल मिलकर ३० समूह निवासित है | मह्यावंशी, वणकर, चमार, भांभी, मेघवाल, भंगी, गरोड़ इत्यादि | इनमे से मारू वणकर ४४.४२%, रोहदिास-रोहित, भांभी २४.९७%, भंगी महेतर २४.९७% जनसँख्या अधिकांश ६०.६६% दलितवर्ग ग्रामीण है |

१९९७ की जनगणनानुसार १८.३३% दलितवर्ग भारतीय शहरो में निवास कर रहा है | जबकि गुजरात में ३७.९४% वर्ग शहरो में निवासित है |

संपूर्ण भारत की तुलना में गुजरात का दलितवर्ग अधिक साक्षर एवम शिक्षित है | ९०.१४% गांधीनगर में सबसे ज्यादा जबकि सबसे कम बनासकांठा में ४०.७२% शिक्षित है |

खेतहिरो का प्रमाण १२.५५% खेतमजदूरो का प्रमाण ४१.४७% तथा अन्य सेवाओं में रत १६.१२% दलितवर्ग है |

३२% दलितो के पास १ हेक्टर से कम जमीन है, २७% दलितो के पास २ हेक्टर जमीन है, ०२% के पास १० हेक्टर से भी अधिक जमीन अपनी मालिकी की है | महादअंश के दलित वर्ग के पास जीवन-चापन कर सके उतनी जमीन नहीं है |

०९.०१% दलित वर्ग स्नातक है, ०.९% इजनेर है, जबकि ०१.५% तबिबो के प्रमाण मिलते है |

राजकीय रूप से खुद के हित एवम संवर्धन हेतु विविध पक्षों में बंट गये है |

जनसँख्या	अहमदाबाद	- ६२०७६५	-	१०.६७%
	भावनगर	- १४२१२८	-	०५.७६%
शहरीकरण	अहमदाबाद	- ६२०७६५	-	३५.०९%
	भावनगर	- १४२१२८	-	०३.८६%
शिक्षित	अहमदाबाद	- पुरुष ८२.७९)- ७०.८५% स्त्री – ५७.३७)		
	भावनगर	पुरुष – ६९.५२)-५२.७६% स्त्री - ३५.०४		

विकास एवम शहरीकरण के कारन अत्याचार के किस्से कम होंगे ऐसे अनुमान के सामने निराशा ही मिली |

दलितवर्ग की ०७ लाख जनसँख्या के सामने १४६२७ अत्याचार के किस्से दर्ज है | १९९० से १९९२ के समयावधि में ४६५९ अत्याचार के केस दर्ज हुए |

टी.के.ओमन के मतानुसार – ' भारतीय समाज मुख्य रूप से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, क्षुद्र जैसे पांच भागों में विभाजित था, जिसे पंचम या पंचजन नाम से भी पहचाना जाता है |

'दलित' शब्द का अर्थ एवम परिभाषा :-

दलित शब्द संस्कृत की 'दल' धातु से व्युत्पन्न है जो ६०-७० सालों से भारतीय समाज में 'दलित' शब्द के रूप में व्यह्वृत है |

डॉ.आम्बेडकरजी ने अब्याज, बहिष्कृत एवम् पददलितो के लिए 'कुचला हुआ वर्ग' संज्ञा से अभिहित किया है |

प्राचीन युग से भारतीय समाज में शुद्र, चांडाल, दस्यु, असुर, पंचम, अछूत, अंत्यज, हरिजन, पददलित इत्यादि नाम से पहचाने जाते थे | आज यह नाम 'दलित' शब्द में समां गए |

साहित्य में 'दलित' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग प्रेमचंदजी ने ई.स. १९३६ में तथा गुजराती साहित्य परिषद के तेरवेह अधिवेशन में प्रमुख कनैयालाल मुंशी ने ई.स. १६३७-३८ में किया था | मेघाणी कृत 'युग वंदना' (ई.स. १९३५) काव्य संग्रह में भी दलित शब्द का प्रयोग हुआ है | डॉ. आम्बेडकरजी ने दलित वर्ग की पहचान हेतु 'अनुसूचित' शब्द का प्रयोग किया था |

(1) नामदेव ढसाल के मतानुसार – 'अनुसूचित जाति- जनजाति, में 'नवबौद्ध, जमीन विहीन कृषको, आर्थिक रूप से शोषित समुदाय का समावेश होता है |

(2) मार्क्सवादी के अनुसार – 'सामान्य रूप से दलित वर्ग में ऐसी जातिओ का समावेश होता है की समाज की वर्ण व्यवस्था के अंतर्गत निम्नवर्ग के रूप में गिना गया, जिसमे अनुसूचित जाति, जनजाति एवम् बक्षीपंच वर्ग का भी समावेश होता है |'

(3) श्रीनिवास के मतानुसार – 'वर्ण व्यवस्था के मात्र चार भाग थे जिसमे 'पंचम' था | अस्पृश्य वर्ग को स्थान नहीं मिला था |'

(4) डॉ.दुबे के मतानुसार – 'पंचम' वर्ग को वर्ण व्यवस्था के चार वर्णों से निम्न वर्ग माना गया है |'

(5) धूर्य के मतानुसार – 'अस्पृश्यो की गिनती चार वर्णों से भिन्न की जाती है |

भारतीय संविधान धारा नं.३४१ के अंतर्गत राष्ट्रपति को किसी निश्चित जाति को अनुसूचित घोषित करें ऐसी सत्ता दी गई है | भारतीय मानससशास्त्रीय सर्वेक्षणानुसार ७५१ समुदायों के लोग अनुसूचित जाति के अंतर्गत आते है | सूचि ने लगभग ६३८ अनुसूचित जातिओं की सूची दी है |

ई.स. १९९७ में अनुसूचित वर्ग की जनसँख्या -१३.८२ करोड से अधिक थी, जो १६.४८ प्रतिशत होती है | १८.७२ प्रतिशत जनसँख्या शहरों में निवासित है, जबकि ८१.२८ प्रतिशत संख्या गाँव में है |

अनुसूचित वर्ग की पारंपरिक स्थिति :-

टी.के.ओमन के मतानुसार – 'अनुसूचित जाति के लोग अशुद्धि में जन्म लेकर अशुद्धि में ही मृत्यु के द्वार जाते है | पारंपरिक व्यवस्था के अंतर्गत गरीबी, अन्याय, निरक्षरता, असमानता, शोषण, अन्याय और आरोग्य के रूप से देखे तो तो इन सब में दलित एवम् पीड़ित नजर आता है | आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक कमजोरियाँ उसके जीवन की विशेषताएँ बन गई |

पारंपरिक स्थिति में परिवर्तन के चिन्ह :-

(1) संविधान और अनुसूचित जातियाँ |
(2) सामाजिक कायदे-कानून |
(3) अनुसूचितों के लिए आरक्षण |

उपर्युक्त विविध परिवर्तन के फलस्वरूप दलित वर्ग की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन नजर आता है | लैकिन पारंपरिक स्थितियों में संभवत: परिवर्तन न आ पाया | स्वतंत्रता के उनसठ साल के बाद पारंपरिक समस्याएँ नये रूप में सामने आ रही है, जिसके कटु परिणाम दलित वर्ग भुगत रहा है |

समस्या :-

(1) निस्बित के अनुसार – 'सामाजिक समस्या वर्तन की ऐसी रीत है की जो जिसका समाज के कई लोगो, समाज ने स्वीकृत किए |एक या उससे ज्यादा नियमों को तोड़ते है |'

(2) कूलर ओर मायर्स के मतानुसार – 'सामाजिक समस्या ऐसी परिस्थिति है जिसको समाज का विशिष्ट समूह स्वीकृत सामाजिक नियमों से विरुद्ध मानते है |

इस प्रकार सामाजिक समस्याएँ समाज में अनचाही परिस्थितियाँ मानी जाती है | अर्थात इसकी समाज पर विपरीत असर होकर जीवन अवरोधक सिद्ध होती है | इसको समाजशास्त्रियों ने सामाजिक समस्या के रूप में माना है | इस प्रकार वर्तमान समाज में आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक जैसी अनेक समस्याएँ दलित वर्ग के विकास में अवरोध नजर आती है |

प्रश्न :

(1) विकसीत वर्गसमूह की अलिप्तता |
(2) सामूहिकता से व्यक्तिगत पहचान |
(3) पारंपरिक ग्राम्य अर्थव्यवस्था एवम् निष्क्रिय लोकशाही |
(4) निष्क्रिय लोकशाही |
(5) स्थानांतर की समस्या |
(6) कुदरती आपतियों से पुनःस्थापन |

(7) मानवसर्जित आपदाओं में सुरक्षा एवम् भौतिक हानि|
(8) वर्तमान में ग्राम्य एवम् नगरीय समाज में उत्पन्न नये प्रश्न|

विकसित वर्ग समूह की अलिप्तता :
वर्तमान समय में दलित वर्ग का अंशतः विकास हुआ, जिसके क्रमशः परिवर्तन समाजी एवम् भौतिक रूप से आ रहे है, जिसके परिणाम स्वरूप भद्र वर्ग मूल दलित वर्ग से धीरे-धीरे असग हो रहा है | कई दलितो ने अपने समाज से अपना मुँह मोड लिया है | कभी-कभी तो सुखी-सम्पन्न दलित अपने ही पिछड़े हुए भाई-बहनों का शोषक बन जाता है | उद्योगपति या कोंट्राक्टर वर्ग दलित मजदूरों का शोषण करते है |

सामूहिकता से व्यक्तिगत पहचान :-
मनुस्मृति से स्वतंत्रता तकव्यक्ति की पहचान जातिगत होती थी | व्यक्ति से अधिक समूह को महत्त्व प्रदान किया जा रहा था | जाति, कुल, खान-दान, हमारी पहचान के मूलधार थे, जबकि आज आप कौन हो ? या आप किस पद पर हो ? जैसी संकुचित व्यक्तिगत पहचान महत्वपूर्ण बन रही है | ऐसी मनः स्थिति से दलित वर्ग को अपने वर्ग का सहकार मुश्किल बनता जा रहा है | व्यक्तिगत कुशलता नहीं होती तो हमारी पहचान नहीं बन पाती | इसलिए ही धीरे-धीरे व्यक्ति का अस्तित्व जोखिम के हो ऐसा महसूस हो रहा है |

पारंपरिक ग्राम्य अर्थ-व्यवस्था एवम् निष्क्रिय लोकशाही :-
वर्तमान समय में ७०% लोग गाँव में निवासित है | जिसमे से दलित वर्ग के अधिक से अधिक लोग गाँव में बस रहे है | गांवों में प्राथमिक स्तर के व्यवसाय पाए जाते है जो धान्य की उत्पति के समय पर निर्भर है | उसमे रोजगार भी 'सीझन' अनुसार मीलता है | सालभर मजदूरी मिलना कठिन है | परिणाम स्वरूप दलित वर्ग को रोजगारी हेतु अनुसार स्थानांतर करना पड़ता है | रोजगारी न मिलने से परावलंबी जीवन चायन करना पड़ता है |

लोकशाही औपचारिक रही है | स्थानी स्वराज की संस्थाओं में अनामत प्रथा के कारन दलित वर्ग को सत्ता में स्थान मिला है | वह सिर्फ प्रश्न या मत के मूल्य तक मर्यादित रहा | उसे तो नेतृत्व के आदेशानुसार कार्य करना पड़ता है | वह न तो दलित वर्ग के प्रश्न हल कर सकते है और न तो स्वतंत्र विचार कर सकते है | पंचायत की न्याय समिति निर्णायक भूमिका अदा करने में निष्फल रही है | निर्णायक समितियों में प्रभावि जातियों के निर्णय मान्य रखे जाते है |

स्थानांतर या कुदरती आपदाओं के बाद पुन:स्थापन :-
दलित एवम् शोषित वर्ग हमेशा गाँव या शहर के अंतिम विस्तारों में निवासित होने के कारन कुदरती आपदाएँ उन्हें अधिक प्रभावित करती है, इस वर्ग में गरीबी के कारन मकान कच्चे होने से उसे कुदरती आपदाएँ ढहा कर नूकशान करती है | २००६ को अतिवृष्टि में गुजरात में खास करके दलित वर्ग के सामने कई मुश्किल खड़ी कर गई है |

मानवसर्जित आपदाओं से भौतिक नूकशान एवम् रक्षण का प्रश्न :-
१९९२ के कोमी हुल्लड, बाबरी ध्वंस-२०००, गोधराकांड, मंडल कमिशन इत्यादी घटनाओ के दौरान असंख्य दलित मारे गए, असंख्य बेघर हुए जिसकी वजह से फिर से निवास, रोजगारी एवम् व्यक्तिगत सर परिवारी रक्षण के कई प्रश्न दलित वर्ग को हिला देते है |

नये उत्पन्न हुए प्रश्न – इस्यु –
विकास के अनेक परिबल और वर्तमान आर्थिक कई नीती के कारण आर्थिक क्षेत्र में जल्दी से बदलाव आ रहा है | साथ ही साथ सामाजिक संस्थाएं भी परिवर्तित हो रही है और इनके परिणाम स्वरूप दलितो के असरकारक अनेक नए मुद्दे सामने आए है | जिसि डॉ रूपों में जान सकते है |

(1) ग्रामीण क्षेत्र :-
दलितो का स्थान आज भी निम्न अस्पृश्य ही रहा है | उसके साथ कम करने के दौरान संपर्क व्यवहार रहता है, परंतु रहेठाण, दुकान में प्रवेश मंदिर में प्रवेश बीनदलितों के साथ शादी के व्यवहार में सामाजिक दुरत्व रहा है |

सरकारी योजनाओ में महत्तम लाभ प्रभावी ज्ञातिओं को ही मिलते है | जो दलितो को मिलने योग्य हो वैसे लाभ वैसे दलितो को ही मिलने देते है, जो उनका कहा मानते है |

खेती की जमीन जो दलितो को मिल रही है, वह क्षारयुक्त एवम् आर्थिक द्रष्टि से पैसो का व्यय भी ज्यादा होता है | ज्यादातर यह नुकशानकारक रही है या प्रभावी ज्ञाति उसमें हल होने देती नहीं है |

पंचायत में न्याय समिति की रचना करी अनिवार्य है | परंतु वह प्रक्रिया कागज तक ही सीमित रही है | इसकी असरकारकता उत्पन्न होने ही नहीं दी है |

लाभ मिलते है वह कहने के लिए ही है उन्नति व् उत्कर्ष में वह लाभ देखने तक नहीं मिलते |

दलितो की अपनी असंगठितता गाँवो को बिखेर देती है | सहकार की भावना का आभाव है |

सबका विकास नहीं हुआ सिर्फ २ से ५% ही विकास हुआ है |

पीढ़ी दर पीढ़ी सद्धरता प्राप्त नहीं हुई है, जिसि कारण विकास सिर्फ उपरी है |

पारंपरिक व्यवसाय नहीं रहे और नए व्यवसायों में श्रमिक वर्ग और नए व्यवसायों में श्रमिक वर्ग के रूप में रहना पड़ता है |

(2) नगरीय समाज में :-
जो दलित वर्ग गाँव से नगर में व्यवसाय हेतु गए है उसी सभी प्रकार की सहलियत सरलता से मिलती हो ऐसा नहीं है | रहेठाण, काम, व्यवसाय में अनुकूलता, बीन दलितो का सहकारी वलण, यह तमाम बातों में शहेरी दलित अनेकविध समस्याएँ सह रहा है |

नगर में बीन दलित रहेठाण विस्तार में रहने के लिए घर सरलता से नहीं मिल सकता |

व्यापार व्यवसाय करने में मुश्केली |

नौकरी में बीन दलितों के अग्रता दी नहीं जाती | अपूर्ण प्रतिभाव भेदभाववाला बरताव, काम में ढील होती है |

बीन दलित पडोसी हो तो आप-ले का व्यवहार मर्यादित बनता है |

भेदभाव किसी ना किसी स्वरूप में रखा जाता है |

इस प्रकार वर्तमान समय में ग्रामीण, नगरीय समाज में दलितों की परस्थिति लौकिक व् आर्थिक क्षेत्र में परिवर्तन तो जुर आया है, परन्तु पहेचन तो ज्ञातिगत ही रही है |

क्या कर सकते है ?

(1) शिक्षण :-
जो छात्रालय की व्यवस्थावाले हो ग्रामीण, नगरीय विस्तारों में वेसी व्यवस्था देना वर्तमान जरूरियात है |

(2) रोजगारी :-
खातरीपूर्ण रोजगारी की योजना सार्थक बने |

(3) जुरत मंदों की जाँच करके ही तक देनी चाहिए |

REFERENCES

(१) सामाजिक समस्याएँ, राम आहूझा रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर एवम् नई दिल्ली (१९९४), पृष्ठ-१५१ से १७२. (२) गुजरात में दलित अस्मिता : उदभव, घडतर और संवर्धन की प्रक्रिया, अर्जुन पटेल सेन्टर फॉर सोश्यल स्टडीस, सूरत (२००४) (३) कोमी रमखानों की राजनीति : निशान – मुस्लिम, लक्ष्यांक पछात जाति, अर्जुन पटेल, बहुजन नवजागृति प्रकाशन, सूरत (२०००) (४) गुजरात में अनुसूचित जातियाँ : डॉ. मनजीभाई एस, मकवाना, सुरभि प्रकाशन, वडोदरा (२०००) (५) गुजरात के वणकरो – एक अध्ययन, डॉ.मनुभाई.एस.मकवाना, सुरभि प्रकाशन, वड़ोदरा (२००४) (६) आजादी की आधी सदी और गुजरात में दलितो की परस्थिति : संपादक-ज्योत्सना एफ. मेकवान, इसुदान आर. वाघेला, सुरभि प्रकाशन, वड़ोदरा (२००९) (७) परिवर्तन की और दलित समाज : प्रो.एम.के.परमार, पार्श्व पब्लिकेशन, अहमदाबाद (२००५) (८) शहरी दलित युवको : कथा और व्यथा डॉ.एच.एल.चावडा, सुरभि प्रकाशन, वड़ोदरा (२००४) (९) दलित समाज, परस्थिति और प्रश्नों : डॉ.एच.एल.चावडा, अन्वेषण अधिष्ठान, भावनगर (२००६)